क्या ईश्वर के ब्रह्म महावाक्यों में फेरबदल करना उचित है?

किसी भी धर्म के अनुयायी के लिए उसके धर्म का धर्मग्रंथ परम आदरणीय होता है। जैसे हिन्दुओं के लिए 'गीता', मुसलमानों के लिए 'कुरान शरीफ़', ईसाईयों के लिए 'बाइबल', बौध्द मतवलम्बियों के लिए 'धम्मपद', सिक्खों के लिए 'गुरुग्रंथ साहब' इत्यादि। कुछ धर्मों के अनुयायी तो अपने धर्मग्रंथ को भगवान का महावाक्य मानते हैं तथा उसको उद्धृत करते समय या उसका स्पष्टीकरण करते समय किसी भी गलती को अक्षम्य मानते हैं, किन्तु एक मत ऐसा भी है जहाँ ईश्वरीय महावाक्य कही जाने वाली ज्ञान मुरलियों को यथोचित सम्मान नहीं दिया जा रहा है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, जो कि संसार के सामने यह दावा करता है कि स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक दादा लेखराज में प्रवेश कर ईश्वरीय ज्ञान सुनाया है, जिसे ज्ञान मुरलियाँ कहा जाता है। वास्तव में ये ज्ञान मुरलियाँ परमात्मा शिव ने दादा लेखराज के मुख द्वारा सन् **1951** से **18** जनवरी,**1969** में उनके देहावसान तक अपने अलौकिक बच्चों के सम्मुख सुनाई थी। शुरुआत में ये बच्चे अपने हाथों से मुरली नोट करते थे और अपने हाथों से ही इसकी कॉपियाँ बनाकर अन्य शहरों में रहने वाले ब्रह्माकुमार-कुमारियों को भेजते थे। बाद में इसे टाइप और साइक्लोस्टाइल करवा कर भेजा जाने लगा और अभी तो बकायदे मा.आबू की आफसेट प्रिंटिंग प्रेस में मनमाने तरीके से काटपीट कर सारे विश्व के सेवाकेन्द्रों में हज़ारों की तादाद में भेजी जा रही है, किन्तु ब्रह्माकुमारी संस्था में इस प्रकार टाइप की गई मुरलियों का अभिलेख केवल पाँच वर्षों का उपलब्ध है। सन् **1969** से, दादा लेखराज के देहावसान के पश्चात् ब्रह्माकुमारी संस्था के आश्रमों में प्रतिदिन प्राय: इन्हीं पाँच वर्ष की मुरलियों को पढ़ा जाता है तथा हर पाँच वर्ष बाद दोहराया जाता है।

ईश्वरीय वाणी होने के कारण ज्ञान मुरलियों को ब्रह्माकुमारियों द्वारा जितना सम्मान दिया जाना चाहिए उतना नहीं दिया गया है। दादा लेखराज के समय भी जब मुरलियाँ हाथ से लिखकर सबको भेजी जाती थी, तब भी इनमें फेरबदल होता था, जिसका परमपिता शिव ने स्वयं एक मुरली में उल्लेख किया है। **दिनांक 8.3.92 पृ.2 की रिवाइज़्ड मुरली के अनुसार - मुरली लिखना अच्छी**

सर्विस है, सब खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे। बाबा अक्षर बहुत अच्छे हैं। नहीं तो लिखते हैं - अक्षर अच्छे नहीं। बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारे रतनों की चोरी हो जाती है। बाबा हम अधिकारी हैं - जो आपके मुख से रतन निकलते हैं वह सब हमारे पास आने चाहिए। यह कहेंगे भी वही जो अनन्य होंगे।

जब दादा लेखराज के जीवन काल में ही मुरलियों में फेरबदल होता था, तो फिर उनके शरीर छोड़ने के पश्चात् यदि इस फेरबदल में तेजी आ जाए यानी सैकड़ों मुरलियों, अव्यक्त वाणियों के महावाक्यों में कटिंग या फेरबदल कर दिया जाए तो इसमें क्या आश्चर्य है?

सन् **1969** के बाद, हर पाँच साल के पश्चात् जब ब्रह्माकुमारी संस्था के माउंट आबू स्थित मुख्यालय में इन ज्ञान मुरलियों को रिवाइज़ किया जाता है तो उस समय कुछ तो अनजाने में गलतियाँ हो जाती हैं और कुछ जानबूझकर फेरबदल किया जाता है। उदाहरण के तौर पर, इसका एक ज्वलन्त प्रमाण है - दिनांक **20.11.88** तथा **21.11.93** की मुरली, जिसमें सन् **1969** के बाद, परमपिता शिव के नए शारीरिक माध्यम, विश्व के मालिक के स्थान के प्रति इशारे के रूप में उत्तर प्रदेश स्थित 'फर्रुखाबाद' का उल्लेख किया गया है। इस मुरली के अनुसार - **मैं तो खुद मालिक हूँ। फर्रुखाबाद में मालिक को मानते हैं ना! तुमने मालिक का अर्थ भी समझा है। वह है मालिक, हम उनके बच्चे हैं। तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए। बच्चे कहते हैं- हमारा बाबा। तो बाप के धन के तुम मालिक हो।** इसी मुरली को जब **21.11.93** में रिवाइज़ किया गया, तब उपर्युक्त महावाक्य परमपिता शिव के नये पार्ट को छुपाने के लिए इस प्रकार बदल दिया गया - **मैं तो खुद मालिक हूँ। मालिक को भी मानने वाले होते हैं; परन्तु उनसे पूछना चाहिए कि तुमने मालिक का अर्थ समझा है?** इस प्रकार इस मुरली में फर्रुखाबाद के उल्लेख को काट दिया गया। वास्तव में फर्रुखाबाद में स्वयं परमपिता शिव द्वारा स्थापित आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय के विकास को रोकने के लिए ही ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा ईश्वरीय महावाक्यों के साथ फेर-बदल किया जा रहा है। यह अत्यंत दुखद बात है।

ईश्वरीय महावाक्यों अर्थात् ज्ञान मुरलियों के महत्व को रेखांकित करते हुए ब्र.कु.गुल्ज़ार दादी के तन से दादा लेखराज की आत्मा द्वारा सुनाई गई दिनांक **23.10.75** की अव्यक्त वाणी में बताया गया है - **मुरली है लाठी, इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जावेगी। ..... तो लगन से मुरली पढ़ना व सुनना अर्थात् मुरलीधर की लगन में रहना। मुरलीधर से स्नेह की**

निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी। मुरली से लगन अर्थात् सच्चा ब्राह्मण। मुरली से लगन कम अर्थात् हाफकास्ट ब्राह्मण।

कई ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा ज्ञान मुरलियों और अव्यक्त वाणियों में दी गई श्रीमत का उल्लंघन तो होता ही है, किन्तु इन ज्ञान मुरलियों में ही फेरबदल करना उस परमपिता शिव के प्रति घोर अनादर का सूचक है। जब आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सदस्यों द्वारा इन्हीं ज्ञान मुरलियों में परमपिता शिव के बदले हुए स्थान एवं शरीर के प्रति इशारे देने वाले महत्वपूर्ण रेखांकित महावाक्यों को ईश्वरीय संदेश के पर्चों के रूप में दिया जाता है, तो कई ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ क्रोधित होकर इन्हें फाड़ देते हैं या अपने पाँव तले कुचल देते हैं। यह वैसा ही है, जैसे प्राचीन भारत के इतिहास में विदेशी आक्रमणकारियों ने अत्यंत मूल्यवान शास्त्रों को नष्ट कर दिया था और तब से ही भारत का पतन होता चला आया है। औरंगजेब के शासनकाल में भी भारतीय शास्त्रों को भाड़ में भून दिया जाता था, जमीन में खुदाई करके गाड़ दिया जाता था और नदियों में फाड़ कर फेंक दिया जाता था। इसी प्रकार वर्तमान संगमयुगी शूटिंग काल में भी तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा ईश्वरीय महावाक्यों के रूप में मुरलियों को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले मुस्लिम आक्रांताओं की शूटिंग करने सम्बन्धी सैकड़ों प्रमाण मिल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त परमपिता परमात्मा शिव ने ब्रह्मा बाबा के मुख से कई वर्ष जो मुरलियाँ चलाई थीं, उसे टैपरिकार्ड में टैप करके भी रखा जाता था; चूँकि वह सारी की सारी सैकड़ों की तादाद में चलाई गई मुरलियों की रिकार्डिंग परमपिता शिव की वाणियों का हूबहू पक्का प्रमाण थी; परंतु ब्रह्मा उर्फ कृष्ण के भक्त की तरह मुखिया बी.केज़ ने त्रिमूर्ति शिव की प्रथम मूर्ति ब्रह्मा का देहावसान होने के बाद, कृष्ण उर्फ ब्रह्मा के साथ ही अपना प्रभाव बरकरार रखने के लिए, शिव की सर्वोपरि मूर्ति महादेव शंकर (राम) की प्रत्यक्षता को रोकने के लिए, ब्रह्मा मुख से रिकार्ड की गई सारी कैसेटों को नेस्तनाबूद कर दिया और सिर्फ काट-छाँट की हुई **2/4** कैसेटें ही दिखावा करने लिए बची रह गईं, जो अभी माँगने पर जिज्ञासुओं को दे दी जाती हैं।

यही हाल ब्रह्माकुमारी आश्रम में छपाये गए सबसे पुराने **30x40"** के त्रिमूर्ति, झाड़, ल.ना., सीढ़ी आदि चित्रों का भी हुआ। ये चित्र ब्रह्मा बाबा ने संदेशियों के द्वारा हुए साक्षात्कार के आधार पर बार**2** करैक्शन करके तैयार कराए थे और हज़ारों की तादाद में छपाए थे। यही नहीं, अंग्रेजी और गुजराती में भी इन बड़े**2**

चित्रों की कापियाँ छपाई गई थीं। जैसे ही सन् **76** में एडवांस पार्टी के द्वारा इन चार पुराने चित्रों पर महादेव शंकर की तीसरी मूर्ति के प्रत्यक्ष होने की बात उजागर हुई, तो अचानक ये सारे ही पुराने चित्र ब्रह्माकुमारी आश्रमों से या तो गायब कर दिए गए या नष्ट कर दिए गए। ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ईश्वरीय ज्ञान को लेकर इतना बड़ा फ्राड करके जन सामान्य को गुमराह करने वाली संस्था लगभग समूचे विश्व के हर छोटे-बड़े शहर, गाँव**2** में कैसे व्याप्त हो गई - यह बड़े ही आश्चर्य की बात है! इस प्रश्न का एकमात्र जवाब यही दिया जा सकता है कि दुष्कर्म करने वालों के द्वारा वर्तमान महापापी कलियुग अंत की शूटिंग में भी पापाचार, भ्रष्टाचार का बोलबाला होता ही है, जिसका विनाश करने के लिए कलियुग अंत में कलंकीधर भगवान को अवतार लेना ही पड़ता है। यह **5000** वर्ष पूर्व की भांति श्रीमद्भगवत्गीता प्रसिध्द **"**विनाशाय च दुष्कृताम्**"** का ईश्वरीय कार्य अभी फिर से जारी है।

ओमशांति